उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित

एल. टी. ग्रेड

भर्ती परीक्षा

अर्थशास्त्र

सॉल्वड पेपर

एवं

प्रैक्टिस बुक

व्याख्या सहित हल

प्रधान सम्पादक
ए. के. महाजन
सम्पादन एवं संकलन
एल.टी. परीक्षा विशेषज्ञ समिति
कम्प्यूटर ग्राफिक्स
बालकृष्ण, चरन सिंह
संपादकीय कार्यालय
12, चर्च लेन, प्रयागराज-211002
9415650134
Email : yctap12@gmail.com
website : www.yctfastbooks.com/www.yctbooks.com/www.yctbooksprime.com
© All rights reserved with Publisher

प्रकाशन घोषणा
प्रधान सम्पादक एवं प्रकाशक आनन्द कुमार महाजन ने E:Book by APP Youth Prime BOOKS, से मुद्रित करवाकर,
वाई.सी.टी. पब्लिकेशन्स प्रा. लि., 12, चर्च लेन, प्रयागराज-211002 के लिए प्रकाशित किया।
इस पुस्तक को प्रकाशित करने में सम्पादक एवं प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गई है
फिर भी किसी त्रुटि के लिए आपका सुझाव एवं सहयोग सादर अपेक्षित है।
किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र प्रयागराज होगा।

विषय-सूची

■ उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग एल.टी. ग्रेड-परीक्षा, 2018 अर्थशास्त्र व्याख्या सहित हल 3-11
■ उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (LT Grade) अर्थशास्त्र प्रैक्टिस सेट-1 व्याख्या सहित हल 12-18
■ उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (LT Grade) अर्थशास्त्र प्रैक्टिस सेट-2 व्याख्या सहित हल 19-26
■ उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (LT Grade) अर्थशास्त्र प्रैक्टिस सेट-3 व्याख्या सहित हल 27-34
■ उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (LT Grade) अर्थशास्त्र प्रैक्टिस सेट-4 व्याख्या सहित हल 35-43
■ उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (LT Grade) अर्थशास्त्र प्रैक्टिस सेट-5 व्याख्या सहित हल 44-51
■ उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (LT Grade) अर्थशास्त्र प्रैक्टिस सेट-6 व्याख्या सहित हल 52-59
■ उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (LT Grade) अर्थशास्त्र प्रैक्टिस सेट-7 व्याख्या सहित हल 60-69
■ उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (LT Grade) अर्थशास्त्र प्रैक्टिस सेट-8 व्याख्या सहित हल 70-78
■ उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (LT Grade) अर्थशास्त्र प्रैक्टिस सेट-9 व्याख्या सहित हल 79-88
■ उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (LT Grade) अर्थशास्त्र प्रैक्टिस सेट-10 व्याख्या सहित हल 89-98

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग एल.टी. ग्रेड–परीक्षा योजना एवं पाठ्यक्रम

परीक्षा हेतु 150 वस्तुनिष्ठ बहुविकल्पीय प्रश्नों वाला एक प्रश्नपत्र होगा। जिसका प्रत्येक प्रश्न 01 अंक का होगा। प्रत्येक गलत उत्तर के लिए 1/3 (0.33) अंक दण्ड के रूप में काटा जायेगा।

उक्त प्रश्नपत्र दो भागों में होगा।

प्रथम भाग– सामान्य अध्ययन – 30 प्रश्न (वस्तुनिष्ठ प्रकार) **द्वितीय भाग–** मुख्य विषय – 120 प्रश्न (वस्तुनिष्ठ प्रकार)

कुल प्रश्नों की संख्या – 150 **परीक्षा अवधि–** 2 घंटे (120 मिनट).....पूर्णांक 150

विषय–अर्थशास्त्र

1– **अर्थशास्त्र की प्रकृति–**अर्थशास्त्र की परिभाषाएँ, चुनाव की समस्या, व्यष्टि एवं समष्टि विश्लेषण, स्थैतिक एवं प्रवैगिक अध्ययन की विधियाँ, संतुलन का विचार।

2– **उपभोक्ता व्यवहार एवं मांग विश्लेषण–**उपभोक्ता का संतुलन, मार्शल का दृष्टिकोण, अनधिमान वक्र विश्लेषण (कीमत, आय तथा प्रतिस्थापन प्रभाव), माँग का नियम, माँग व पूर्ति की लोच, प्रकार एवं माप, उपभोक्ता अतिरेक।

3– **उत्पादन एवं जनसंख्या के सिद्धान्त–**उत्पादक का संतुलन, उत्पादन के नियम – परिवर्तनशील अनुपात का नियम एवं पैमाना के प्रतिफल के नियम, लागत एवं आगम वक्रों का विश्लेषण, जनसंख्या के सिद्धान्त, माल्थस, अनुकूलतम जनसंख्या एवं जनांककीय संक्रमण सिद्धान्त।

4– **बाजार की प्रवृत्ति एवं विभिन्न बाजारों में कीमत निर्धारण–**पूर्ण प्रतियोगिता, अपूर्ण एवं एकाधिकारिक प्रतियोगिता, एकाधिकार।

5– **वितरण के सिद्धान्त–**वितरण का सीमान्त सिद्धान्त, पूर्ण व अपूर्ण प्रतियोगिता में मजदूरी दर का निर्धारण, लगान के सिद्धान्त, प्रतिष्ठित एवं कीन्स का ब्याज सिद्धान्त, नइट, जे.के. मेहता, शुम्पीटर के लाभ सिद्धान्त।

6– **मुद्रा बैंकिंग तथा मुद्रा स्फीति एवं मौद्रिक नीति–**मुद्रा का मूल्य निर्धारण – फिशर एवं कैम्ब्रिज दृष्टिकोण, केन्स का बचत-निवेश सिद्धान्त, केन्द्रीय बैंक के कार्य, व्यापारिक बैंकों के कार्य, साख सृजन एवं नियंत्रण, मुद्रा पूर्ति की अवधारणा, मुद्रा-स्फीति की अवधारणाएँ-प्रकार, नियंत्रण एवं नीति।

7- **अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एवं नीति–**निरपेक्ष लाभ सिद्धान्त, तुलनात्मक लागत का सिद्धान्त, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लाभ एवं शर्तें, स्वतंत्र व्यापार व संरक्षण, विनिमय दर निर्धारण के सिद्धान्त, भुगतान संतुलन समस्या एवं निदान।

8– **सार्वजनिक वित्त एवं राजकोषीय नीति–**सार्वजनिक बनाम निजी वस्तुएँ, सार्वजनिक व्यय का महत्व एवं सिद्धान्त, कर की प्रकृति, प्रकार एवं करारोपण के सिद्धान्त, सार्वजनिक ऋण के प्रकार, उगाही एवं निर्मोधन।

9– **आर्थिक विकास–**आर्थिक प्रणालियां, बाजार बनाम राज्य, आर्थिक विकास का माप तथा इस हेतु अन्तर्राष्ट्रीय सूचकांको का प्रयोग, आर्थिक विकास में बचत एवं पूंजी निर्माण का महत्व, आर्थिक विकास के सिद्धान्त– रोस्टोव के आर्थिक समृद्धि के चरण, न्यूनतम क्रांतिक प्रयास, प्रबल प्रयास सिद्धान्त तथा असंतुलित विकास का सिद्धान्त, प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक संस्थाएं, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष, विश्व बैंक, विश्व व्यापार संगठन, ब्रिक्स देश आदि।

10– **भारतीय अर्थव्यवस्था की चुनौतियां–**भारतीय अर्थव्यवस्था की विशेषताएँ, पंचवर्षीय योजनाओं की प्रगति एवं समीक्षा, नीति आयोग एवं आर्थिक नीतियां, भारतीय कृषि में उत्पादकता वृद्धि के प्रयास एवं नीति, भारत में गरीबी, बेरोजगारी एवं कौशल विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं पोषण, भारत में राजकोषीय नीति एवं बजट प्रबन्धन, केन्द्र-राज्य वित्तीय संबंध एवं संघीय सहकारिता विकास की चुनौतियां, भूमण्डलीकरण, आर्थिक विकास एवं वैश्विक व्यापार के विभिन्न आयाम।

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग LT ग्रेड परीक्षा, 2018
अर्थशास्त्र
व्याख्या सहित हल प्रश्न-पत्र

(परीक्षा तिथि : 29 जुलाई, 2018)

1. निम्नलिखित में से कौन-सा एक सुमेलित नहीं है?

(a) केन्स — 1. जेनरल थियोरी ऑफ इम्प्लॉयमेन्ट, इन्टरेस्ट एन्ड मनी
(b) हिक्स — 2. ए थियोरी ऑफ ट्रेड साइकिल
(c) मिल्टन फ्रीडमैन — 3. स्थायी आय परिकल्पना
(d) पैरेटो — 4. लाभ सिद्धान्त

Ans. (d) : कीन्स की पुस्तक 'जनरल थिअरी ऑफ इम्प्लॉयमेंट', इन्टरेस्ट एण्ड मनी, हिक्स की पुस्तक 'ए थिअरी ऑफ ट्रेड साइकिल' है तथा मिल्टन फ्रीडमैन ने 'स्थायी आय परिकल्पना सिद्धांत' का प्रतिपादन किया है। पैरेटो ने 'इष्टतम सिद्धांत' (Optimal Theory) का प्रतिपादन किया।

2. ''आपूर्ति अपनी माँग का स्वयं सृजन करती है''- कथन निम्नलिखित अर्थशास्त्रियों में से किस एक से सम्बद्ध है?

(a) एडम स्मिथ (b) जे.बी.
(c) मार्शल (d) केन्स

Ans. (b) : ''आपूर्ति अपनी मांग का स्वयं सृजन करती है।'' यह कथन 'जे.बी.से' का है। इसका आशय यह है कि कोई भी उत्पादक जो बाजार में वस्तुओं को लाता है, वह केवल उन्हें अन्य वस्तुओं के बदले बदलने के लिए ही लाता है। 'से' इस मत के थे कि उत्पादन की कोई क्रिया बेरोजगार श्रमिकों तथा अन्य साधनों को रोजगार देगी, इसके फलस्वरुप अतिरिक्त उत्पादन के मूल्य के बराबर साधनों की आय का सृजन हो जाएगा। इस प्रकार उत्पादन की पूति में वृद्धि साथ ही साथ मांग में वृद्धि लाएगी।

3. एक शुद्ध सार्वजनिक वस्तु की सीमान्त लागत क्या होगी?

(a) शून्य (b) धनात्मक
(c) ऋणात्मक (d) इकाई के बराबर

Ans. (a) : शुद्ध सार्वजनिक वस्तुयें वे है, जिनके उत्पादन से बाह्य लाभ का सृजन होता है और इस प्रकार के लाभ का उपभोग वे भी करते है, जिन्होंने इसके लिए भुगतान नहीं किया है अर्थात् इनका लाभ अविभाज्य होता है तथा सम्पूर्ण समाज को प्राप्त होता है। शुद्ध सार्वजनिक वस्तु की दो महत्वपूर्ण विशेषताएँ हैं-
1. प्रतिद्वन्द्विता की अनुपस्थिति 2. वर्जन का अभाव

4. यदि उपभोग की सीमान्त प्रवृत्ति (MPC)= 0.75 हो, तो निवेश गुणक का मान होगा?

(a) $\frac{4}{3}$ (b) 4
(c) $\frac{1}{4}$ (d) $\frac{3}{4}$

Ans. (b) : निवेश गुणक $(k)=\frac{1}{1-MPC}$

प्रश्नानुसार, $MPC = 0.75$

तो, $k=\frac{1}{1-0.75}$, $=\frac{1}{0.25}$

$=\frac{100}{25}$, $\boxed{K=4}$

5. केन्स के अनुसार, निवेश-माँग निम्नलिखित में से किन दो कारकों पर निर्भर करती है?

1. उपभोक्ता की आय
2. ब्याज की दर
3. उपभोग की सीमान्त प्रवृत्ति
4. पूँजी की सीमान्त दक्षता

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए।

(a) 1 और 3 (b) 2 और 4
(c) 2 और 3 (d) 3 और 4

Ans. (b) : कीन्स के अनुसार पूंजी की सीमांत दक्षता तथा ब्याज की दर विनियोग के दो महत्वपूर्ण निर्धारक तत्व है। इस कारण कोई भी उद्यमी विनियोग करने से पहले इसकी तुलना करता है। इस प्रकार उद्यमी उस स्थिति में विनियोग करेगा, जब पूंजी की सीमांत उत्पादकता ब्याज की दर से अधिक हो अर्थात $MEC > r$। यदि $MEC < r$ होगा तो उद्यमी विनियोग नहीं करेगा। अतः स्पष्ट है कि विनियोग उस स्तर पर संतुलन में होगा, जहां पर ब्याज की दर (r) तथा पूंजी की सीमांत उत्पादकता समान हो अर्थात, $(MEC = r)$।

6. यदि आपूर्ति वक्र $S= 2p^2-10$ हो तो $p= 10$ इकाई हेतु आपूर्ति की लोच क्या होगी?

(a) इकाई से कम (b) इकाई के बराबर
(c) इकाई से अधिक (d) अनन्त

Ans. (a) : प्रश्नानुसार,

$S = 2P^2-10$

$P = 10$

अतः, $\frac{dS}{dP}=4P-0$

अब, $S = 2(10)^2-10$

तो, $= 2 \times 100-10 = 200-10$

$S = 190$

आपूर्ति की लोच $= -\dfrac{dS}{dP}.\dfrac{P}{S}$

$= -\left(4P.\dfrac{10}{190}\right)$

$= -\left(4\times 10.\dfrac{10}{190}\right), = -\left(40.\dfrac{10}{190}\right)$

$e_S = -2.2$

अतः आपूर्ति की लोच इकाई से कम।

7. माँग फलन है कीमत का एकदिश-

(a) बढ़ता हुआ फलन

(b) घटता हुआ फलन

(c) न ही बढ़ता हुआ और न ही घटता हुआ फलन

(d) स्थिर फलन

Ans. (b) : किसी वस्तु की मांग एवं उसको प्रभावित करने वाले कारकों के बीच फलनात्मक सम्बन्ध व्यक्त करने वाले समीकरण को मांग फलन कहते है।

$$\boxed{Dx = f\left(P_x, P_0, Y, T\right)}$$

मांग फलन कीमत का एकदिश घटता हुआ फलन है, क्योंकि किसी वस्तु की मांग एवं कीमत में विपरीत संबंध होता है।

8. यदि माँग $x = \dfrac{100}{p}$ वक्र हो, तो p= 10 इकाई हेतु माँग की लोच क्या होगी?

(a) आधी (b) एक

(c) शून्य (d) अनन्त

Ans. (b) प्रश्नानुसार, $x = \dfrac{100}{P}$, $P = 10$

तो, $x = \dfrac{100}{10}$

$x = 10$

मांग की लोच $\left(e_d\right) = -\dfrac{dQ}{dp}.\dfrac{P}{Q}$, $x = 100P^{-1}$

या, $\left(e_d\right) = -\left(\dfrac{-100}{P^2}.\dfrac{P}{Q}\right)$, $\dfrac{dx}{dP} = 100P^{-2}$

$= \dfrac{100}{10^2}.\dfrac{10}{10}$, $= -\dfrac{100}{P^2}$

$= \dfrac{100}{100}\times\dfrac{10}{10}$

$\boxed{e_d = 1}$

9. सामान्य आपूर्ति वक्र की ढाल होती है-

(a) धनात्मक (b) ऋणात्मक

(c) शून्य (d) अनन्त

Ans. (a) : आपूर्ति से आशय किसी वस्तु की उस मात्रा से है, जिसे कोई विक्रेता एक निश्चित कीमत तथा निश्चित समय पर बेचने को तैयार रहता है। पूर्ति का विस्तार तथा संकुचन एक ही पूर्ति वक्र पर होता है जबकि पूर्ति की वृद्धि एवं कमी में पूर्ति वक्र बदल जाते हैं।

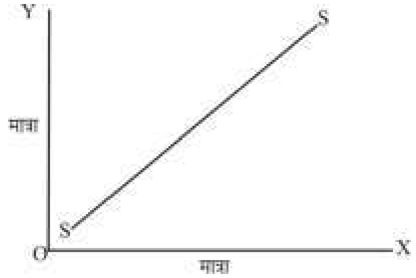

10. यदि सीमान्त आय 15 इकाई हो तथा औसत आय 20 इकाई हो, तो कीमत के सापेक्ष माँग की लोच क्या होगी?

(a) एक (b) एक से अधिक

(c) एक से कम (d) अनन्त

Ans. (b) : प्रश्नानुसार, MR = 15

AR = 20

तो,

$e_P = \dfrac{AR}{AR - MR}$

$= \dfrac{20}{20-15}$

$\boxed{e_P = 4}$

अतः कीमत के सापेक्ष मांग की लोच इकाई से अधिक होगी।

11. उपभोक्ता किस वस्तु की कीमत घटने पर उपभोग घटा देता है?

(a) श्रेष्ठ वस्तु (b) निम्न वस्तु

(c) गिफिन वस्तु (d) उदासीन वस्तु

Ans. (c) : गिफेन वस्तु एक प्रकार की विशिष्ट हीन वस्तु होती है, जिनके सम्बन्ध में उपभोक्ता उनकी कीमत गिरने पर उनके उपभोग को घटा देता है तथा उनकी कीमत बढ़ने पर उनके उपभोग को बढ़ा देता है अर्थात् गिफेन पदार्थ की माँग-मात्रा उसकी कीमत में परिवर्तन की दिशा में ही बदलती है। गिफेन वस्तुओं की अवस्था में ऋणात्मक आय प्रभाव प्रतिस्थापन प्रभाव से अधिक शक्तिशाली होता है।

12. उपभोक्ता के अनधिमान वक्र की ढाल दर्शाती है-

(a) वस्तुओं के कीमत अनुपात को

(b) वस्तुओं के प्रतिस्थापन की सीमान्त दर को

(c) साधन प्रतिस्थापन को

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans. (b) : उपभोक्ता के अनधिमान वक्र की ढाल पर वस्तुओं के प्रतिस्थापन की सीमांत दर (MRS_{xy}) सदैव ऋणात्मक होती है क्योंकि प्रत्येक उपभोग के बाद अतिरिक्त इकाई घटता हुआ फलन प्रदान करती है तथा वस्तुयें एक-दूसरे की अपूर्ण स्थानापन्न होती है।

$$\boxed{MRS_{xy} = \dfrac{\Delta y}{\Delta x}}$$

जैसा कि निम्न रेखाचित्र से स्पष्ट है-

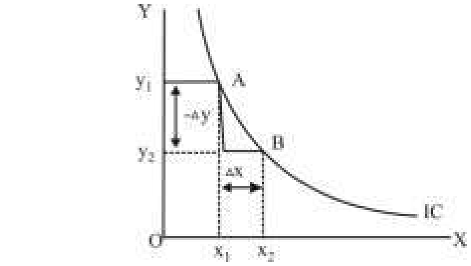

13. उद्घाटित अधिमान्य सिद्धान्त आधारित है-

(a) गणनावाचक उपयोगिता पर
(b) क्रमवाचक उपयोगिता पर
(c) बाजार के व्यवहार पर
(d) आचरणवादी क्रमवाचक उपयोगिता पर

Ans. (d) : उपभोक्ता के व्यवहार के सम्बन्ध में व्यक्त अधिमान (Revealed Preference Theory) सिद्धांत का प्रतिपादन प्रो0 सेमुल्सन द्वारा किया गया। इस सिद्धांत की निम्न मान्यतायें है-

1. उपभोक्ता विकेकपूर्ण है।
2. सकर्मकता
3. सबल क्रमबद्धता की मान्यता
4. व्यक्त प्राथमिकता की अवधारणा (Revealed Preferance axiom)
5. उपभोक्ता की रुचि दी हुई है।
6. स्थिर व्यवहार की अवधारणा (Consitency Postulate)
7. मांग की धनात्मक आय लोच

14. उत्पादन के कारक की सकल उत्पादकता अधिकतम तब होगी, जब

(a) कारक की सीमान्त उत्पादकता धनात्मक हो
(b) कारक की सीमान्त उत्पादकता ऋणात्मक हो
(c) कारक की सीमान्त उत्पादकता शून्य हो
(d) कारक की सीमान्त उत्पादकता स्थिर हो

Ans. (c) : उत्पादन के कारक की सकल उत्पादकता अधिकतम तब होगी, जब कारक की सीमांत उत्पादकता शून्य हो। जैसा कि निम्न रेखाचित्र से स्पष्ट किया गया है, जहाँ TP अधिकतम है, उस स्थिति में MP शून्य है।

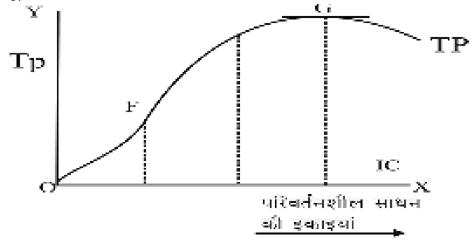

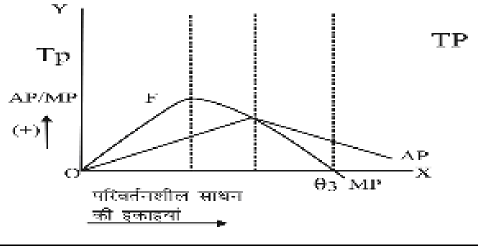

15. यदि माँग की लोच का मान 3 हो, तो औसत आय (AR) तथा सीमान्त आय (MR) में सम्बन्ध निम्नलिखित में से किससे प्रदर्शित होगा?

(a) $AR = \frac{1}{3}MR$ (b) $MR = \frac{2}{3}AR$
(c) $MR = \frac{1}{3}AR$ (d) $AR = \frac{2}{3}MR$

Ans. (b) : $e_p = 3$

तो, $MR = AR\left(1-\frac{1}{e}\right)$, $MR = AR\left(1-\frac{1}{3}\right)$

$$MR = AR\left(\frac{3-1}{3}\right)$$

$$MR = AR\left(\frac{2}{3}\right)$$

16. रैखिक समांग उत्पादन फलन से किस प्रकार के पैमाने का प्रतिफल प्राप्त होता है?

(a) बढ़ते हुए पैमाने का प्रतिफल
(b) स्थिर पैमाने का प्रतिफल
(c) ह्रासमान पैमाने का प्रतिफल
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans. (b) : कॉब-डगलस उत्पादन फलन के अनुसार रैखिक समांग उत्पादन फलन से पैमाने का स्थिर प्रतिफल प्राप्त होता है अर्थात् श्रम व पूंजी को किसी अनुपात में बढ़ाने से वस्तु उत्पादन भी उसी अनुपात से बढ़ता है।

17. समग्र मूल्य स्तर का सर्वाधिक व्यापक माप है-

(a) उपभोक्ता मूल्य सूचकांक
(b) उत्पादक मूल्य सूचकांक
(c) सकल राष्ट्रीय उत्पाद अपस्फीतक
(d) थोक मूल्य सूचकांक

Ans. (c) : समग्र मूल्य स्तर का सर्वाधिक व्यापक माप सकल राष्ट्रीय उत्पाद अवस्फीतिकारक (GNP Deflator) है क्योंकि इसमें सभी वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्यों में परिवर्तन को लिया जाता है। जब सकल राष्ट्रीय उत्पाद की गणना बाजार कीमतों अर्थात् प्रचलित मूल्यों पर की जाती है तो इसे बाजार कीमत पर मौद्रिक जी.एन.पी. कहते हैं और जब सकल राष्ट्रीय उत्पाद की गणना आधार वर्ष के मूल्यों पर की जाती है तो इसे स्थिर मूल्यों पर जी.एन.पी. अर्थात 'वास्तविक जी.एन.पी' कहते हैं। मौद्रिक GNP में वृद्धि तथा वास्तविक GNP की वृद्धि का अंतर ही GNP की कीमत में वृद्धि है और इसे ही 'GNP Deflator' कहते है। अर्थात्

$$GNP_D = \frac{\text{चालू कीमतों पर जी.एन.पी}}{\text{स्थिर कीमतों पर जी.एन.पी}}$$

18. पैमाने का ह्रासमान प्रतिफल नियम किस काल में लागू होता है?

(a) बाजार काल (b) अल्प काल
(c) दीर्घ काल (d) सुदीर्घ काल

Ans. (c) : दीर्घकाल में सभी साधन परिवर्तनीय होते हैं। सभी साधनों की वृद्धि होने पर 'उत्पादन का पैमाना' ही बड़ा हो जाता है और इसलिए इस स्थिति को 'पैमाने का प्रतिफल' कहते है अर्थात् प्रतिफल या उत्पादन में वृद्धि जो पैमाने में वृद्धि के परिणामस्वरूप हो। पैमाने के प्रतिफल के तीन रूप होते हैं-

1. **पैमाने का वर्धमान प्रतिफल-**जिस अनुपात में आगतों में वृद्धि की जाती है उससे अधिक अनुपात में निर्गत में वृद्धि होती है।
2. **पैमाने का सम प्रतिफल-**जिस अनुपात में आगत में वृद्धि होती है, उसी अनुपात में निर्गत में वृद्धि होती है।
3. **पैमाने का ह्रासमान प्रतिफल-**जिस अनुपात में आगत में वृद्धि होती है, उससे कम अनुपात में निर्गत में वृद्धि होती है।

19. यदि सकल लागत फलन

$$c = \frac{1}{2}x^3 - 4x^2 + 100x + 108$$

हो, तो इकाई हेतु औसत स्थिर लागत क्या होगी?

(a) 10 इकाई (b) 12 इकाई
(c) 100 इकाई (d) 108 इकाई

Ans. (b) : TC = TVC+TFC

$$AFC = \frac{TFC}{Q}$$

प्रश्नानुसार, $TC = \frac{1}{2}x^3 - 4x^2 + 100x + 108$

$TFC = 108$

x= 9

अतः $AFC = \frac{TFC}{X} = \frac{108}{9}$

$\boxed{AFC = 12}$

20. एक औसत स्थिर लागत वक्र की आकृति होती है-

(a) सरल रेखा (b) परवलय
(c) आयताकार अतिपरवलय (d) वृत्त

Ans. (c) : यदि कुल स्थिर लागत को उत्पादित इकाइयों से भाग दे दें तो प्रति इकाई औसत स्थिर लागत प्राप्त हो जाता है।

$$\boxed{AFC = \frac{TFC}{Q}}$$

जैसे-जैसे उत्पादन की मात्रा बढ़ती जाती है, उस पर लगने वाली प्रति इकाई औसत स्थिर लागत क्रमशः घटती जाती है। AFC -वक्र दाहिनी ओर नीचे गिरता हुआ होता है, पर कभी आधार वक्र को स्पर्श नहीं करेगा। AFC- वक्र का आधार आयताकार अतिपरवलय (Rectangular hyperbola) होता है, जिसके प्रत्येक बिन्दु पर कुल स्थिर लागत (Q×AFC = TFC) स्थिर बनी रहेगी।

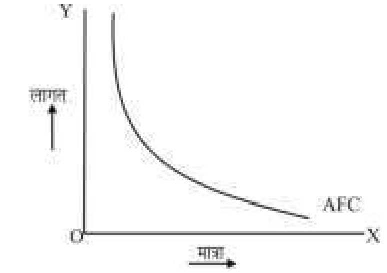

21. एक सकल लागत वक्र की सामान्य आकृति होती है-

(a) रैखिक (b) द्विघातीय
(c) त्रिघातीय वक्र (d) n^{th} कोटि का बहुपदीय

Ans. (d) : एक सकल लागत वक्र की सामान्य आकृति n^{th} कोटि का बहुपदीय होती है।

22. माँग की लोच (e), उत्पाद की कीमत (A) तथा सीमान्त आय (M) के मध्य निम्नलिखित में से कौन-सा सही सम्बन्ध है?

(a) $M = A\left(e + \frac{1}{e}\right)$ (b) $M = A\left(\frac{e}{e-1}\right)$

(c) $M = A\left(\frac{1-e}{e}\right)$ (d) $M = A\left(\frac{e-1}{e}\right)$

Ans. (d) : औसत आय (AR), सीमांत आय (MR) तथा मांग की मूल्य लोच (e_p) के बीच सम्बन्ध को निम्न सूत्र से स्पष्ट कर सकते है-

$$MR = AR\left(1 - \frac{1}{e}\right)$$

या $$MR = AR\left(\frac{e-1}{e}\right)$$

⇒ यदि $e = 1$ है तो MR शून्य होगा।
⇒ यदि $e > 1$ है तो MR धनात्मक होगा।
⇒ यदि $e < 1$ है तो MR ऋणात्मक होगा।

23. शुद्ध एकाधिकारी निर्धारण कर सकता है-

(a) कीमत
(b) उत्पाद-मात्रा
(c) या तो कीमत या उत्पाद-मात्रा
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans. (c) : पूर्ण प्रतियोगिता फर्म की तरह ही एकाधिकारी भी अपने लाभ को अधिकतम करने का प्रयास करता है। एकाधिकारी का लाभ अधिकतम तब होता है, जब-

(1) MC = MR हो
(2) संतुलन बिन्दु पर सीमांत लागत (MC) वक्र का ढाल सीमांत आय (MR) वक्र की ढाल से अधिक हो।

एकाधिकारी का मांग वक्र और AR वक्र एक ही होता है, जो ऋणात्मक ढाल वाला होता है तथा MR सदैव कीमत से कम होती है। इसीलिए एकाधिकारी एक साथ कीमत अथवा पूर्ति दोनों को नियंत्रित नहीं कर सकता। वह या तो कीमत को नियंत्रित करेगा या उत्पादन को।

24. पूर्ण प्रतियोगिता में बाजार कीमत का निर्धारण होता है-

(a) लाभ अधिकतम होने की शर्त MC= MR से

(b) माँग और पूति की दशाओं की व्यवहार प्रणाली से

(c) सरकार द्वारा

(d) औसत लागत से

Ans. (b) : पूर्णप्रतियोगिता में बाजार कीमत का निर्धारण उद्योग की मांग एवं पूर्ति की परस्पर क्रिया द्वारा निर्धारित होती है। उद्योग की कुल मांग एवं कुल पूर्ति जहां एक-दूसरे के बराबर होती है, वहीं कीमत निर्धारित होती है। मांग एवं पूति की वह प्रक्रिया स्वतः समायोजन की प्रक्रिया है, जिसमें विचलन होने पर मांग एवं पूर्ति की शक्तियां स्वतः क्रियाशील हो जाती है और विचलन को समाप्त कर कीमत को पुनः संतुलन कीमत पर ले आती है।

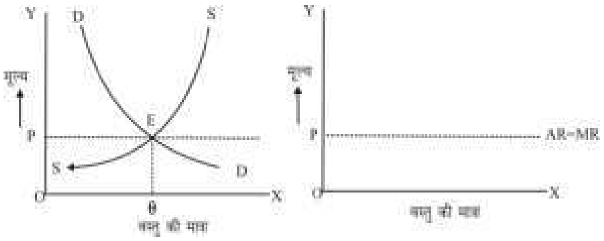

25. कीमत विभेद तब लाभ देता है जब दोनों बाजारों में माँग की कीमत लोच-

(a) भिन्न हो (b) समान हो

(c) सदेव इकाई के बराबर हो (d) अनन्त हो

Ans. (a) : एक ही नियंत्रण के अन्तर्गत उत्पादित एक ही वस्तु को अलग-2 क्रताओं को अलग-अलग मूल्यों पर बेचने की क्रिया, कीमत विभेद कहलाती है। कीमत विभेद संभव होने के लिए निम्न शर्तें आवश्यक हैं-

1. विभिन्न बाजारों में मांग की लोच भिन्न-2 हो।

2. बाजारों का पृथक-2 तथा दूर होना।

26. एकाधिकारी प्रतियोगिता में-

(a) एकल फर्म निकट स्थानापन्नों का उत्पादन करती है

(b) अनेक फर्में निकट स्थनापन्नों का उत्पादन करती हैं

(c) अनेक फर्में विभेदित उत्पादों का उत्पादन करती हैं

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans. (b/c) : चैम्बरलिन की एकाधिकारिक प्रतियोगिता की धारणा का वस्तु विभेद सबसे महत्वूपर्ण तत्व है, क्योंकि वस्तु विभेद के कारण ही एक साथ प्रतियोगिता तथा एकाधिकार के गुण संयुक्त होते है। विभिन्न फर्मों द्वारा उत्पादित की जा रही वस्तु बिल्कुल एक जैसी नहीं होती बल्कि उनमें कुछ अन्तर पाया जाता है अर्थात् यहां विभेदीकरण का अर्थ विभिन्न उत्पादों का बिल्कुल भिन्न होना नहीं होता बल्कि उनमें केवल थोड़ा सा ही अन्तर पाया जाता है और वे वास्तव में एक-दूसरे के निकट स्थानापन्न होते है। इसलिए उनमें मांग की प्रति-लोच अधिक होती है, परन्तु अनन्त नहीं। इस प्रकार कह सकते हैं कि चैम्बरलिन के सिद्धांत में विभिन्न क्रेताओं के उत्पाद परस्पर विभेदित होते हैं, पर वे एक-दूसरे के उत्पाद के नजदीकी स्थानापन्न होते है।

27. निम्नलिखित मे से कौन-सा एक ब्याज की दर के निर्धारण के लिए केन्स द्वारा वर्णित कुल मुद्रा की माँग (*L*) को व्यक्ति करता है?

(a) $L= L_1 (r, Y)$

(b) $L= L_2 (r, Y)$

(c) $L= L_1 (Y) + L_2(r)$

(d) $L= L_2 (Y)+ L_2(r)$

Ans. (c) : कीन्स के अनुसार मुद्रा की मांग से आशय मुद्रा की उस राशि से है, जिसे लोग अपने पास नकद अथवा तरल रूप में रखना चाहते है। कीन्स कहते है कि कोई व्यक्ति मुद्रा की मांग तीन उद्देश्यों के लिए करता है-

1. लेन-देन उद्देश्य 2. सतर्कता उद्देश्य 3. सट्टा उद्देश्य

लेन-देन तथा सतर्कता उद्देश्य हेतु मुद्रा की मांग अपेक्षाकृत ब्याज निरपेक्ष होता है, परन्तु अत्यंत आय लोचात्मक होती है अर्थात्-

$$L_1 = f(y)$$

सट्टा उद्देश्य हेतु मुद्रा की मांग ब्याज की दर का फलन होती है अर्थात $\boxed{L_2 = f(r)}$

इस प्रकार मुद्रा की कुल मांग होगी अर्थात् $\boxed{L=L_1 (y) + L_2(r)}$ है।

मुद्रा के कुल मांग या कुल तरलता फलन को इस प्रकार भी व्यक्त कर सकते है-

$$\boxed{L = F (Y, r)}$$

28. ''लगान एक विभेदात्मक आधिक्य है।'' यह धारणा किसकी है?

(a) रिकार्डो (b) मार्शल

(c) पीगू (d) एडम स्मिथ

Ans. (a) : ''लगान एक विभेदात्मक आधिक्य है।'' यह धारणा रिकार्डो की है। रिकार्डो कहते है कि लगान वह विभेदक आधिक्य है जो अधिक उपजाऊ भूमियों को कम उपजाऊ भूमियों की तुलना में प्राप्त होता है। इस प्रकार लगान एक भेदात्मक लाभ है, जो भूमि की 'उर्वरता में अन्तर' अथवा 'स्थिति में अंतर' अथवा दोनों कारणों से हो सकता है।

आर्थिक लगान = अधिसीमांत भूमियों की वास्तविक उपज-सीमांत भूमि की उपज

29. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर चुनिए-

सूची- I	सूची-II
A. तरलता जाल	1. मॉर्शल
B. जोड़ की समस्या	2. चैम्बरलिन
C. समूह सन्तुलन	3. यूलर प्रमेय
D. आभासी लगान	4. केन्स

Code/कूट:

	A	B	C	D
(a)	4	3	2	1
(b)	1	2	3	4
(c)	2	1	4	3
(d)	2	4	1	3

Ans. (a) :

(A) तरलता जाल	4. कीन्स
(B) जोड़ की समस्या	3. यूलर प्रमेय
(C) समूह संतुलन	2. चैम्बरलिन
(D) आभासी लगान	1. मार्शल

30. यदि मुद्रा के परिमाण सिद्धान्त के फिशर के समीकरण में मुद्रा पूर्ति को दो गुना कर दें, तो कीमत स्तर हो जाएगा-

(a) आधा (b) दो गुना
(c) अपरिवर्तित (d) केवल कुछ अधिक

Ans. (b) : यदि मुद्रा के परिमाण सिद्धांत के फिशर के समीकरण में मुद्रा पूर्ति को दोगुना कर दें तो कीमत स्तर दोगुना हो जाएगा।

31. केन्स के तरलता पसंदगी ब्याज के सिद्धान्त में तरलता जाल दर्शाता है-

(a) पूर्णतया लोचदान मुद्रा की माँग
(b) पूर्णतया बेलोचदान मुद्रा की माँग
(c) मुद्रा की शून्य पूर्ति
(d) मुद्रा की बेलोचपूर्ण पूर्ति

Ans. (a) : ब्याज की एक निश्चित नीची दर पर मुद्रा की मांग पूर्णतया लोचदार हो जाती है और इस स्थिति में LP- वक्र पूर्णतया लोचदार हो जाता है, जिसे तरलता जाल कहते है। इस स्थिति से ब्याज की दर और नीचे नहीं गिर सकती है और लोग बॉण्ड की अपेक्षा तरल मुद्रा को अधिक रखते है। तरलता जाल की स्थिति में सामान्य मजदूरी कटौती नीति भी प्रभावपूर्ण नहीं रह पाती है।

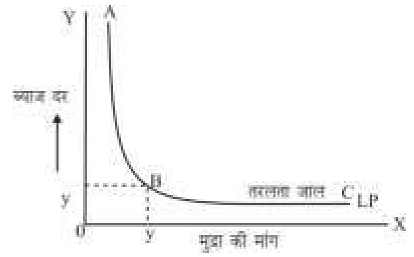

32. किसने कहा कि ''मुद्रास्फीति अन्यायपूर्ण है और मुद्रासंकुचन अव्यावहारिक है-दोनों में से बाद वाला खराब है''?

(a) मॉर्शल (b) रॉबर्टसन
(c) क्राउथर (d) जे0एम0केन्स

Ans. (d) : जे.एम. कीन्स ने कहा कि ''मुद्रास्फीति अन्यायपूर्ण है और मुद्रा संकुचन अव्यावहारिक है-दोनों में से बाद वाला खराब है।''

33. निम्नलिखित में से कौन-सा एक, केन्द्रीय बैंक द्वारा व्यवहार में लायी गई, खुले बाजार की क्रियाओं का उदाहरण है?

(a) सुनारों को स्वर्ण की बिक्री
(b) व्यापारिक बैंकों तथा अन्य वित्तीय संस्थानों को सरकारी प्रतिभूतियों की बिक्री
(c) विदेशी विनिमय बैंकों को डॉलर की बिक्री
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans. (b) : खुले बाजार की क्रियाओं का तात्पर्य देश के केन्द्रीय बैंक द्वारा विभिन्न प्रकार की परिसंपत्तियों जैसे-स्वर्ण, विदेशी मुद्रा, सरकारी प्रतिभूतियों एवं निजी प्रतिभूतियों के क्रय-विक्रय से है।

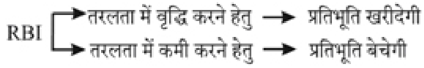

34. लचीली विनिमय दर का विचार आधारित है-

(a) माँग के सिद्धान्त पर
(b) पूर्ति के सिद्धान्त पर
(c) माँग तथा पूर्ति दोनों सिद्धान्त पर
(d) न तो माँग सिद्धान्त पर और न ही पूत्रि सिद्धान्त पर

Ans. (c) : लचीली विनिमय दर (Flexible Exchange rate) का विचार बाजार की मांग एवं पूर्ति के सिद्धांतों पर आधारित है अर्थात् इसका निर्धारण बाजार की शक्तियां करती है। इसमें मौद्रिक अधिकारी द्वारा विनिमय दर को प्रभावित करने हेतु हस्तक्षेप नहीं किया जाता है। यदि किसी करेंसी की आपूर्ति मांग से अधिक है तो विनिमय दर गिर जाएगी तथा इसके विपरीत यदि करेंसी की मांग पूर्ति से अधिक है तो उसकी विनिमय दर बढ़ेगी।

35. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, अन्तरक्षेत्रीय व्यापार की एक विशेष अवस्था है, क्योंकि-

(a) सभी तरह के व्यापार पर तुलनात्मक लागत सिद्धान्त क्रियाशील होता है
(b) कारकों की अगतिशीलता अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की विशेष विशेषता नहीं होती है
(c) सामान्य संतुलन का मूल्य सिद्धान्त भी अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पर क्रियाशील होता है
(d) उपर्युक्त सभी

Ans. (d) : अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, अन्तरक्षेत्रीय व्यापार की एक विशेष अवस्था है, क्योंकि-
1. सभी तरह के व्यापार पर तुलनात्मक लागत सिद्धांत क्रियाशील होता है।
2. कारकों की अगतिशीलता अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की विशेष विशेषता नहीं होती है।
3 सामान्य संतुलन का मूल्य सिद्धान्त भी अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पर क्रियाशील होता है।

36. निम्नलिखित में से कौन-सा एक हैक्सचर-ओहलिन के व्यापार सिद्धान्त के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का कारण है?

(a) लागतों में अन्तर
(b) आवश्यकताओं में अन्तर
(c) करेंसी प्रणालियों में अन्तर
(d) साधन विन्यासों में अन्तर

Ans. (d) : साधनों की उपलब्धता, प्रौद्योगिकी व रुचियां इत्यादि व्यापार सिद्धांत के प्रावैगिक कारकों को संदर्भित करता है।

37. निम्नलिखित में से कौन-सा कारक व्यापार सिद्धान्त के प्रावैगिक कारकों को संदर्भित करता है?

(a) साधनों की उपलब्धता (b) प्रौद्योगिकी
(c) रुचियाँ (d) उपर्युक्त सभी

Ans. (d) : साधनों की उपलब्धता, प्रौद्योगिकी, रुचियाँ व्यापार सिद्धान्त के प्रावैगिक कारकों को संदर्भित करते हैं।

38. निम्नलिखित में से कौन-सा एक अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थान नहीं है?

(a) अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF)
(b) विश्व बैंक
(c) स्टेट बैंक ऑफ इन्डिया
(d) एशियन विकास बैंक

Ans. (c) : अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF),विश्व बैंक (World Bank) तथा एशियन विकास बैंक (ADB) अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थान है, जबकि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (SBI) भारत का सबसे बड़ा राष्ट्रीयकृत वाणिज्यिक बैंक है, जो गोरेवाला समिति की अनुशंसा पर 1 जुलाई, 1955 को इम्पीरियल बैंक ऑफ इण्डिया के स्थान पर अस्तित्व में आया।

⇒ IMF -1945 ⇒ विश्व बैंक-1945 ⇒ ADB-1966

39. निम्नलिखित युग्मों में से कौन-सा एक सुमेलित नहीं है?

(a) आइ. बी.आर.डी. : 1944
(b) आइ. एम.एफ. : 1947
(c) आइ.डी.ए. : 1960
(d) डब्ल्यू.टी.ओ. : 1995

Ans. (b) :
(a) IBRD- 1944 (ब्रेटनवुड्स सम्मेलन के पश्चात्) कार्य प्रारंभ - 1949
(b) IMF - 27 Dec. 1945, कार्य प्रारंभ 1 मार्च 1947
(c) IDA - 24 Sep. 1960
(d) WTO- 1 January, 1995

40. किस आधार पर 'संरक्षण शुल्क' लगाया जाता है?

(a) उद्देश्य के आधार पर
(b) देशानुसार विभेद के आधार पर
(c) प्रतिशोध के आधार पर
(d) पसंदगी के आधार पर

Ans. (a) : उद्देश्य के आधार पर 'संरक्षण शुल्क' लगाया जाता है। संरक्षण शुल्क लगाने का मुख्य उद्देश्य घरेलू उद्योगों को विदेशी प्रतियोगिता से बचाना होता है। इसके अन्तर्गत आयातों पर शुल्क व घरेलू उद्योगों को सब्सिडी प्रदान की जाती है। इसके पक्ष में सर्वाधिक प्रबल मत 'शिशु-उद्योग तर्क' है, जिसे हैमिल्टन ने प्रस्तुत किया तथा फ्रैडरिक लिस्ट ने 1885 में लोकप्रिय बनाया।

41. करारोपण का निम्नलिखित में से किस पर अनुकूल प्रभाव पड़ेगा?

(a) कार्य करने तथा बचत करने की योग्यता
(b) कार्य करने तथा बचत करने की इच्छा
(c) आय के वितरण में असमानताओं को कम करना
(d) रोजगार में वृद्धि

Ans. (c) : करारोपण का अनुकूल प्रभाव यह है कि करारोपण आय के वितरण में असमानताओं को कम करता है।

42. किस दशा में कर विवर्तन संभव नहीं है?

(a) बिक्री कर (b) वस्तु एवं सेवा कर
(c) मनोरंजन कर (d) उत्पाद कर

Ans. (*) : बिक्री कर, वस्तु एवं सेवा कर (GST), मनोरंजन कर व उत्पाद कर अप्रत्यक्ष कर है। चूंकि अप्रत्यक्ष कर का विवर्तन संभव है। इस प्रकार विकल्प में सभी अप्रत्यक्ष कर है, अतः इनमें से कोई विकल्प सही नहीं है।

43. किस अर्थशास्त्री ने सार्वजनिक व्यय को आय के आधार पर वर्गीकृत किया है?

(a) वाग्नर (b) पींगू
(c) डाल्टन (d) निकोलसन

Ans. (c) : सार्वजनिक व्यय को आय के आधार पर डाल्टन ने वर्गीकृत किया है। डाल्टन ने सार्वजनिक व्यय को आय के आधार पर तीन भागों में वर्गीकृत किया है-

1. **प्रतिगामी व्यय**- कम आय वर्ग को कम लाभ तथा अधिक आय वर्ग को लोकव्यय का अधिक लाभ।
2. **आनुपातिक व्यय**- आय के अनुपात में सार्वजनिक व्यय का लाभ।
3. **प्रगतिशील व्यय**- ऐसे सार्वजनिक व्यय, जिनका अधिकांश भाग निर्धन वर्ग को प्राप्त होता है।

⇒ वैगनर ने सार्वजनिक व्यय के संबंध में राज्य के बढ़ते हुए क्रिया-कलापों का सिद्धांत दिया।

44. वस्तु एवं सेवा कर की प्रकृति क्या है?

(a) यह एक बिक्री कर का प्रकार है
(b) जी.एस.टी. मूल्यवर्द्धित कर है
(c) यह एक अंतिम पड़ाव का कर है
(d) इसे प्रत्येक स्तर पर लगाया जाता है

Ans. (b) : भारत में वस्तु एवं सेवा कर 1 जुलाई, 2017 से लागू हुआ। GST 'एक देश-एक कर-एक बाजार' उद्देश्य को पूरा करता है। GST वस्तुओं और सेवाओं के उपभोग पर लगाया गया गंतव्य आधारित कर है। इसमें केवल मूल्य संवर्द्धन (Value Addition) पर ही कर लगाया जाएगा और कर का बोझ अंतिम उपभोक्ता द्वारा वहन किया जाएगा। अतः GST एक प्रकार से मूल्य वर्द्धित कर ही है।

45. पन्द्रहवें वित्त आयोग का अध्यक्ष कौन है?

(a) ए.के. चन्दा (b) एन. के. सिंह
(c) वाइ.वी. रेड्डी (d) के.सी. नियोगी

Ans. (b) : भारत के राष्ट्रपति द्वारा संविधान के अनुच्छेद 280 के तहत नवम्बर, 2018 में 15वें वित्त आयोग का गठन किया गया, जिसके अध्यक्ष एन.के.सिंह है। 15वें वित्त आयोग की संस्तुतियां 2020-2025 तक के लिए होगी।

46. एक अर्थव्यवस्था में 'टेक ऑफ स्टेज' का अर्थ है-

(a) सतत विकास प्रारंभ होता है
(b) अर्थव्यवस्था स्थिर हो जाती है
(c) अर्थव्यवस्था ध्वस्त होने के कगार पर होती है
(d) सभी नियंत्रण दूर हो जाते हैं

Ans. (a) : प्रो0 रोस्टोव ने अपनी पुस्तक 'The stages of Economic Growth' में आर्थिक विकास की पांच अवस्थायें बतायी है-

1. **परम्परावादी अवस्था-** अधिकांश साधन कृषि व्यवसाय में लगे व उद्योग-धन्धे पिछड़ी अवस्था में।
2. **आत्म-स्फूर्ति से पूर्व की अवस्था-**परम्परावादी विधियों को छोड़कर वैज्ञानिक विधियों एवं तकनीकों का प्रयोग प्रारंभ। पूंजी-निवेश की मात्रा 10% तक पहुँच जाती है।
3. **आत्म-स्फूर्ति अवस्था-** क्रांतिकारी परिवर्तन होते है और विकास होने लगता है।
4. **परिपक्वता की अवस्था**–स्वःप्रेरित विकास की अवस्था। पूंजी-निवेश 15 से 20 तक।
5. **अत्यधिक उपभोग की अवस्था-** आर्थिक विकास की अंतिम अवस्था।

47. निम्नलिखित में से कौन-सा एक आर्थिक विकास में बाधक नहीं है?

(a) बाजार की अपूर्णताएँ (b) उपभोग में प्रदर्शन प्रभाव
(c) व्यापार की अनुकूल शर्तें (d) निर्धनता का दुश्चक्र

Ans. (c) : बाजार की अपूर्णताएं, उपभोग में प्रदर्शन प्रभाव, निर्धनता का दुश्चक्र आर्थिक विकास में बाधक है, जबकि व्यापार की अनुकूल शर्तें किसी देश के आर्थिक विकास में बाधक नहीं है, बल्कि यह उस देश के विकास को बढ़ावा देती है, क्योंकि इससे देश का भुगतान संतुलन अनुकूल रहता है।

48. जब पूँजी की कीमत श्रम की कीमत की अपेक्षा अधिक हो, तो तकनीकी होनी चाहिए-

(a) पूँजी गहन (b) श्रम गहन
(c) स्थिर (d) मिश्रित

Ans. (b) : श्रम प्रधान तकनीक वह होती है, जिसमें उत्पादन कार्य में तुलनात्मक रूप से श्रम की अधिक मात्रा (श्रम सस्ता) और पूंजी की कम मात्रा (पूंजी मंहगी) का प्रयोग किया जाता है। इसे श्रम गहन तकनीक या पूंजी बचतकारी तकनीक भी कह सकते है इसके समर्थक अर्थशास्त्री नर्क्स, लुइस, कुजनेट्स, मायर एवं बोल्डविन तथा किण्डलबर्जर है।

पूंजी प्रधान वह तकनीक है, जिसमें सापेक्षिक रूप से पूंजी का अधिक और श्रम का कम प्रयोग किया जाता है।

49. जॉन रोबिन्सन के संवृद्धि मॉडल का सम्बन्ध है-

1. वास्तविक संवृद्धि दर से
2. संभावित संवृद्धि दर से
3. प्राकृतिक संवृद्धि दर से
4. अभीष्ट संवृद्धि दर से

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए।

(a) 1, 3 और 4 (b) 2 और 4
(c) 1 और 2 (d) 3 और 4

Ans. (a) : रॉबिन्सन के संवृद्धि मॉडलों में संभाव्य वृद्धि दर (Potential growth rate) हैरॉड की प्राकृतिक दर के समान है। स्वर्ण युग में वास्तविक वृद्धिदर (G) तथा प्राकृतिक वृद्धि दर (Gn) एक दूसरे के बराबर होती है और अभीष्ट वृद्धि दर (Warranted growth rate) उनके अनुरूप होती है।

50. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर चुनिए-

सूची-I	**सूची-II**
A. क्रांतिक न्यूनतम प्रयास सिद्धांत	1. हैरड तथा डोमर
B. असीमित श्रम आपूर्ति के साथ आर्थिक विकास	2. लीबिन्स्टीन
C. सतत विकास सिद्धान्त	3. जॉन रोबिन्सन
D. पूर्ण रोजगार संतुलन का स्वर्ण-युग	4. लेविस

Code/कूटः

	A	B	C	D
(a)	1	3	4	2
(b)	2	4	1	3
(c)	4	2	1	3
(d)	3	4	1	2

Ans. (b) :

(a)	क्रांतिक न्यूनतम प्रयास सिद्धांत	2. लीबिन्स्टीन
(b)	असीमित श्रम आपूर्ति के साथ आर्थिक विकास	4 लेविस
(c)	सतत् विकास सिद्धांत	1. हैरॉड-डोमर
(d)	पूर्णरोजगार संतुलन का स्वर्ण युग	3 जॉन रॉबिन्सन

51. 'राजीव गाँधी ग्रामीण विद्युतीकरण योजना' किस वर्ष प्रारंभ किया गया?

(a) 2004 (b) 2005
(c) 2006 (d) 2007

Ans. (b) : राजीव गांधी ग्रामीण विद्युतीकरण योजना का प्रारंभ अप्रैल, 2005 में किया गया। यह योजना ब्याज सब्सिडी योजना, त्वरित ग्रामीण विद्युतीकरण कार्यक्रम व कुटीर ज्योति कार्यक्रम का विलय करके शुरु की गई। इसके तहत वर्ष 2009 तक एक लाख गांवों का विद्युतीकरण करने का लक्ष्य रखा गया था।